विचार बिन्दु

व्यस्त मनुष्य को आंसू बहाने का अवकाश नहीं। –बायरन

लव कुश वाटिका राजस्थान में संरक्षण व स्वास्थ्य का समन्वय

राजस्थान सरकार के वनविभाग द्वारा मार्च 2023 के पूर्व सभी जिलों में दो करोड़ रुपये की लागत से स्थापित की जा रही लवकुश वाटिका वस्तुतः जन-सामान्य के स्वास्थ्य हेतु एक महत्वपूर्ण प्रकृति आधारित-समाधान है। इन वाटिकाओं के निर्माण का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति आमजन में जागरूकता बढ़ाना तथा लोगों को स्वास्थ्यकर वनानुभव को बढ़ावा देना है। प्रत्येक लव कुश वाटिका में स्थानीय पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी के अनुकूल स्थानीय प्रजातियों के फलदार, फूलदार, औषधीय एवं छायादार पेड़-पौधे लगाए गए हैं, ताकि लोगों को वहाँ का स्थानीय वनानुभव मिले सके। लव कुश वाटिकाओं में लोगों को प्रकृति के साथ जुड़ने का एक बढ़िया अवसर मिलेगा। राजस्थान सरकार का यह नवाचार सितंबर, 2022 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा "स्वच्छ, स्वस्थ और टिकाऊ पर्यावरण के सार्वभौमिक मानव अधिकार" के बारे में अपनाए गए सुझावों से भी व्यावहारिक समानता रखता है।

अब विश्व की 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या शहरों में निवास करती है। हालांकि भारत के अधिसंख्य लोग अभी भी गांवों में रहते हैं, लेकिन शहरीकरण बहुत तेजी से बढ़ रहा है इसलिए शहरों को रहने योग्य बनाने के लिए प्रकृति-आधारित समाधान खोजना और उनका क्रियान्वयन करना आवश्यक है। प्राकृतिक वातावरण को बेहतर करने और स्वास्थ्य में सुधार के लिए विकल्पों की एक विस्तृत श्रृंखला है। उदाहरण के लिए ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरों और कस्बों में उच्च तापमान रहता है, जिसे कम करने के लिए वृक्षों के आवरण को बढ़ाना एक प्रमाण-आधारित रणनीति है। इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन के कारण गर्म लू चलने की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि का अनुमान है। शहरी वृक्ष इस स्थित में भी शहरों को तापमान की दृष्टि से रहने योग्य बनाकर राहत प्रदान कर सकते हैं, और लोगों के स्वास्थ्य में सुधार कर सकते हैं। राजस्थान में मानव स्वास्थ्य और जैव-विविधता संरक्षण के लिए लव कुश वाटिका एक उपयोगी समाधान है।

शहरी हरियाली और वन मुख्य रूप से दो प्रकार से मददगार होते हैं: पहली, शहरी हरियाली की उपस्थिति मात्र से आसपास रहने वाली जनसंख्या को अनेक लाभ स्वतः प्राप्त होते रहते हैं। दूसरी, इन क्षेत्रों के साथ आसपास रहने वाली जनसंख्या सक्रिय रूप से जुड़ सकती है और विविध प्रकार के व्यक्तिगत लाभ ले सकती है। हरित क्षेत्रों की उपस्थिति से आसपास रहने वाली जनसंख्या के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले धनात्मक प्रभाव को इस विषय पर हुई शोध के प्रकाश में समझा जा सकता है।

वनों का मानव स्वास्थ्य से गहरा नाता है। लगभग 5000 साल पहले आयुर्वेद में वनों के संरक्षण और स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव पर गंभीर और व्यापक विश्लेषण मिलता है। जल, वायु, ऋतुओं तथा मिट्टी के प्रदूषण से होने वाली गंभीर बीमारियों के प्रबंध पर भी जानकारी उपलब्ध है। वनों में विचरण की परंपरा पर भी प्रकाश डाला गया है। प्रकृति-आधारित समग्र चिकित्सा तो आयुर्वेद का मूल प्राण है। तात्पर्य यह है कि हरियाली, वनों, झीलों और नदियों जैसे प्राकृतिक क्षेत्रों को मानव सभ्यता द्वारा प्राचीन काल से स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में उपयोग किया जाता रहा है। आज शहरों में हम जहां रहते और कार्य करते हैं वहां मानव स्वास्थ्य को बेहतर रखने और जैव-विविधता संरक्षण के लिए प्रकृति-आधारित मूलभूत ढांचागत संरचनाओं को विकसित करना आवश्यक है। इस श्रृंखला में लव कुश वाटिका की क्षेत्र में उपस्थिति से लाभ और वहां जाकर वनानुभव से प्राप्त किये जाने वाले लाभों पर श्रृंखलाबद्ध रूप से यहां चर्चा करेंगे।

अर्बनहीट आइलैंड इफ़ेक्ट (शहरी क्षेत्रों का तापमान तुलनात्मक रूप से अधिक रहना) पृथ्वी पर मानव प्रभावों के सबसे स्पष्ट पहलुओं में से एक है, जिसे शहरी वृक्षारोपण के माध्यम से प्रबंधित किया जा सकता है (देखें, एस. पेंग इत्यादि, एनवायर्नमेंटल साइंस एंड टेक्नोलॉजी, 46(2), 696-703, 2012; सी.डी. जिटर इत्यादि, पीएनएएस, 116(15),7575-7580, 2019)। वर्ष 2023 की शुरुआत में विश्व की प्रसिद्ध मेडिकलजर्नल लैंसेट में अर्बनहीट आइलैंड इफ़ेक्ट के कारण होने वाली मृत्यु दर का अनुमान लगाने वाला विश्व का पहला सर्वाधिक व्यापक अध्ययन प्रकाशित हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि यूरोपियन शहरों में वृक्षों के आवरण को 30 प्रतिशत तक बढ़ाने से शहर औसतन 0.4 डिग्री सेल्सियस ठंडे हो जाएंगे। इससे अर्बनहीट आइलैंड इफ़ेक्ट के कारण होने वाली अतिरिक्त मौतों को 40 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। यह गर्मियों में होने वाली सभी मौतों का 1.84 प्रतिशत है (देखें, टी. लंगमान इत्यादि, लैंसेट, 31 जनवरी 2023)। शहरी हरियाली का विकास उच्च तापमान को कम करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है और, अन्य रणनीतियों की तुलना में, अपेक्षाकृत सरल और लागत-प्रभावी तरीका है। उन नीति-निर्माताओं के लिए यह साक्ष्य महत्वपूर्ण है जो शहरी जनसंख्या को स्वास्थ्य लाभ देने हेतु लव कुश वाटिका जैसे प्रकृति-आधारित हरित आधारभूत ढांचागत व्यवस्था प्रदान करना चाहते हैं।

शहरी वनों के रूप में लव कुश वाटिका वस्तुतः वनों और मानव समाज को जोड़ने के साथ ही बेहतर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य और आनंद प्रदान कर सकते हैं। इस बात के पुख्ता प्रमाण हैं कि सप्ताह में लगभग 120 मिनट से 170 मिनट तक हरियाली में बिताने पर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दुरुस्त रहता है। यदि इस समय का सदुपयोग हरियाली में व्यायाम और योग में भी किया जाए तो दोहरा स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है।

इसी से मिलता-जुलता एक अध्ययन 601 यूरोपीय शहरों में पेड़ों की शीतलन क्षमता का अनुमान लगाने हेतु किया गया था। विभिन्न संदर्भों में शहरी ताप द्वीप के शमन में वृक्षों की भूमिका को बेसलाइन और गैर-वनस्पति परिदृश्य के बीच तापमान अंतर का अनुमान दिया। इसमें पाया गया कि शहरी वृक्षों की उपस्थिति ने यूरोपीय शहरों को औसतन 1.1 डिग्री सेल्सियस से 2.9 डिग्री सेल्सियस तक ठंडा किया (देखें, एफ. मरान्दो इत्यादि, सस्टेनेबल सिटीज एंड सोसाइटी, 77, 103564, 2022)। एक साक्ष्य-आधारित दिशानिर्देश ने शीतलन, सूक्ष्म जलवायु में सुधार, वायु और ध्वनि प्रदूषण को कम करने और मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए रिहायशी पड़ोस में 30 प्रतिशत वृक्षावरण रखने का सुझाव दिया है (देखें, सी.सी. कोईनिजेंदिज्क, जर्नल ऑफ़ फॉरेस्ट्री रिसर्च, 2022)। इसके अलावा, महामारी विज्ञान के पूर्व में हुए अध्ययनों ने कम से कम 30 प्रतिशत वृक्षावरण से जुड़े स्वास्थ्य लाभों की जानकारी दिया है जिसके आधार पर मनोरोगों और मधुमेह, उच्च रक्तचाप और हृदय रोग जैसे गैर-संचारी रोगों के जोखिम को कम किया जा सकता है। प्राकृतिक वातावरण के संपर्क में रहने वाली जनसंख्या द्वारा मानसिक विकारों के लिए आपातकालीन चिकित्सा लेने का जोखिम भी कम हो जाता है (देखें, डी. वांग, डी. लि, लैंडस्केप एंड अर्बन प्लानिंग, 230,104568, 2023)।

शहरी वातावरण में पलना-बढ़ना मनोरोग विकारों का जोखिम बढ़ाता है, किन्तु रिहायशी क्षेत्रों में हरियाली मानसिक बीमारियों के जोखिम को कम करती है। हाल ही में अमेरिका में एक राष्ट्रव्यापी अध्ययन जो 900,000 से अधिक लोगों के बीच किया गया, यह सिद्ध करता है कि जो बच्चे सबसे कम हरियाली वाली जगहों में पल-बढ़ कर बड़े हुये थे, उनमें अन्य ज्ञात जोखिम कारकों के प्रभाव से स्वतंत्र, मनोविकारों के विकसित होने का 55 प्रतिशत अधिक जोखिम था। हरियाली वाले क्षेत्रों में घूमना-फिरना तो ठीक है पर उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हमारे घरों के आसपास भी प्राकृतिक वातावरण की बहुतायत और दीर्घकालिक उपस्थिति हो। प्राकृतिक वातावरण को शहरी नियोजन में एकीकृत करना मानसिक स्वास्थ्य में सुधार लाने और मनोरोग के बढ़ते वैश्विक बोझ को कम करने के लिये एक प्रमाण-आधारित रणनीति है (के. इंगेमान इत्यादि, प्रोसीडिंग्सऑफ़ द नेशनल अकैडमी ऑफ़ साइंसेज, 116:5188-5193, 2019)। इसी प्रकार चीन में 23,754 लोगों, जिनकी कुल समेकित आयु 80,001 व्यक्ति-वर्ष थी, के आंकड़ों का अध्ययन से भी अब निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि रिहायशी क्षेत्रों की हरियाली के साथ मानव की निकटता दीर्घायु प्रदान करती है (जे.एस. जी, लैंसेटप्लेनेटरीहेल्थ, 3:ई17-ई25, 2019)।

इस विषय में सबसे भारी अध्ययन जिसका वित्त-पोषण विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किया गया था, वह वर्ष 2019 में दुनिया के एक अगुआ जर्नल में प्रकाशित हुई। हरियाली को स्वास्थ्य-निर्धारक, स्वास्थ्य में सुधार, और प्रसन्नता के लिये उपयोगी माना जाता रहा है। इस व्यवस्थित अध्ययन में विश्व भर के अनुदैर्ध्य अध्ययनों से प्राप्त प्रमाणों की इस बात के लिये समीक्षा की गयी कि हरियाली, पार्क्स, गार्डन्स आदि की उपलब्धता का सकल मृत्यु दर में क्या प्रभाव है। इस मेटा-एनालिसिस में प्रारम्भ में 9298 अध्ययन और 13 अन्य अध्ययनों की पहचान की गयी। इनमें से 9234 (99 प्रतिशत) अध्ययनों को शीर्षक और सारांश जांचने के बाद 77 अध्ययनों में से 68 (88 प्रतिशत) को सम्मिलित किया गया। उक्त के साथ ही मात्रात्मक मूल्यांकन हेतु नौ (12प्रतिशत) अध्ययनों को शामिल किया। इनमें सात देशों के 8.32 लाख व्यक्ति शामिल थे। कुल मिलाकर निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि आसपास की हरियाली और सकल-कारण मृत्यु दर के बीच एक व्युत्क्रम रिश्ते का प्रमाण पाया गया। अन्य शब्दों में कहें तो जैसे-जैसे हरियाली की उपस्थिति बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सभी कारणों से मृत्यु दर में कमी आती जाती है। सन्देश यह है कि मानव समाज जहाँ रहता और काम करता है वहां हरियाली बढ़ाने और जैव-विविधता संरक्षण को बढ़ावा देना मानव स्वास्थ्य के लिये बहुत उपयोगी है (देखें, डी. रोजसरुएडा आदि, द लैंसेट प्लेनेटरी हेल्थ, 3,11:ई469-ई477, 2019)। हाल ही में 18 देशों के 53 अध्ययनों, जिनमें 100 मिलियन से अधिक व्यक्तियों के आंकड़े शामिल थे, की मेटा-एनालिसिस से ज्ञात होता है कि सामान्यीकृत अंतर वानस्पतिक सूचकांक (एनडीवीआई) में 0.1 की बढ़त होने से कार्डियो-वैस्कुलर मृत्यु दर वइस्चेमिक हार्ट डिजीज से मृत्यु दर में 2 से 3प्रतिशत की कमी पाई गई। यह अध्ययन कार्डियो वैस्कुलर स्वास्थ्य पर हरियाली के लाभकारी प्रभावों पर ठोस और निर्विवाद प्रमाण प्रस्तुत करता है (देखें, एक्स-एक्सलिऊ इत्यादि, एनवायर्नमेंटल पॉल्यूशन, 301,118990, 2022)।

एक बड़ा रोचक अध्ययन हाल ही में भारत में हुआ। हरियाली की उपस्थिति और कोविड-19 की मौतों के जोखिम के बीच सह-संबंध की जांच में पाया गया कि देश का जो जिला जितना हरा-भरा और वनाच्छादित था वहां मृत्यु का जोखिम भी तुलनात्मक रूप से उतना ही कम पाया गया (देखें, ए. सिकरवार इत्यादि, एनवायर्नमेंटलरिसर्च, 217, 114906, 2023)। कोलकाता में शहरी पार्क के शीतलन प्रभाव का अध्ययन बताता है कि बॉटनिकल गार्डन 33.55 डिग्री सेल्सियस के औसत तापमान के साथ सबसे ठंडा पार्क था, इसके बाद निक्को पार्क (34.33 डिग्री सेल्सियस), नेचर पार्क (34.48 डिग्री सेल्सियस), रवींद्रसरबोर (34.55 डिग्री सेल्सियस), और सेंट्रल पार्क (36.65 डिग्री सेल्सियस) था। हरियाली का थर्मल पैटर्न पर नकारात्मक प्रभाव मिला। शहरी पार्क के आसपास के क्षेत्रों का तापमान भी कम मिला। इसलिए सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ग्रीन स्पेस का संरक्षण आवश्यक है (देखें, एम्. दास इत्यादि, सस्टेनेबलसिटीज एंड सोसाइटी, 87,104062,2022)।

शहरी वनों के रूप में लव कुश वाटिका वस्तुतः वनों और मानव समाज को जोड़ने के साथ ही बेहतर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य और आनंद प्रदान कर सकते हैं। इस बात के पुख्ता प्रमाण हैं कि सप्ताह में लगभग 120 मिनट से 170 मिनट तक हरियाली में बिताने पर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दुरुस्त रहता है। यदि इस समय का सदुपयोग हरियाली में व्यायाम और योग में भी किया जाए तो दोहरा स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है। यदि आप अपने निवास स्थान पर बैठे कम से कम 3 बड़े पेड़ों को नहीं देख पा रहे हैं, या आपका आस-पड़ोस कम से कम 30 प्रतिशत हरियाली से आच्छादित नहीं है, और आपके निवास स्थान के 300 मीटर के दायरे में घूमने के लिए एक बगीचा नहीं है, तो आप नेचर-डेफिसिट से पीड़ित हैं और आपको लव कुश वाटिका का भ्रमण उपयोगी रहेगा। अगले सप्ताह इस विषय को आगे बढ़ाएंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

(5 फरवरी - गुरु रविदास जयंती विशेष)

दर्शनशास्त्री, कवि एवं समाज सुधारक- महान संत शिरोमणि रविदास

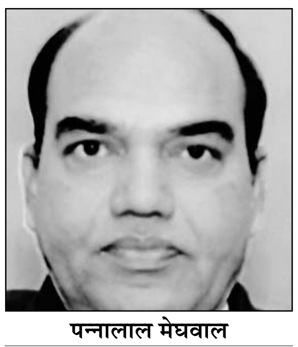

पन्नालाल मेघवाल

भारत में पूर्व मध्यकाल को भक्तिकाल और स्वर्णिम युग कहा जाता है। इस युग में संत कबीर, सूरदास, कुंभनदास, हरिदास, रामानंद, नामदेव, मीराबाई आदि अनेक कवि हुए हैं जिन्होंने ईश्वर भक्ति के साथ सामाजिक समरसता का संदेश दिया है, इन्हीं में से एक थे संत शिरोमणि रविदास। संत रविदास संत कबीर के समकालीन व गुरूभाई माने जाते हैं। महान संत रविदास दर्शनशास्त्री, कवि, समाज-सुधारक और ईश्वर के अनन्य भक्त थे। समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने वाले संत रविदास भारत के उन महापुरुषों में से एक थे जिन्होंने अपने कर्म और वचनों से सभी को अच्छाई, परोपकार और भाईचारे का सन्देश दिया।उन्होंने अपनी रचनाओं एवं रूहानी आवाज़ से गाये गीतों एवं भजनों से सारे संसार को सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

संत शिरोमणि रविदास के जन्म की प्रामाणिक तिथि को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं लेकिन अधिकतर विद्वान सन् 1398 में माघ शुक्ल पूर्णिमा को उनकी जन्म तिथि मानते हैं। माघ पूर्णिमा रविवार के दिन जन्म होने के कारण उनका नाम रविदास रखा गया। उनके पिता का नाम राहू तथा माता का नाम करमा था। उनकी पत्नी का नाम लोना बताया जाता है। संत रविदास जिन्हें संत रविदास, गुरु रविदास, रैदास, रूहिदास और रोहिदास जैसे अनेक नामों से भी जाना जाता है। वे एक परोपकारी और दयालु व्यक्ति थे। दूसरों की सहायता एवं साधु संतों का साथ उन्हें बेहद पसंद था। अपना ज्यादातर समय प्रभु भक्ति एवं सत्संग में व्यतीत करते थे। वह ईश्वर की भक्ति पर पूर्ण विश्वास करते थे। उनके ज्ञान एवं वाणी की मधुरता से सभी लोग प्रभावित होते थे।

संत रविदास ने अपने दोहों व पदों के माध्यम से समाज में जागरूकता लाने का प्रयास किया। सही मायनों में देखा जाए तो मानवतावादी मूल्यों की नींव संत रविदास ने रखी। वे समाज में फैली जातिगत ऊंच-नीच के धुर विरोधी थे और कहते थे कि सभी एक ईश्वर की संतान हैं जन्म से कोई भी जात लेकर पैदा नहीं होता। इतना ही नहीं वे एक ऐसे समाज की कल्पना भी करते हैं जहां किसी भी प्रकार का लोभ, लालच, दुःख, दरिद्रता, भेदभाव नहीं हो।

रविदास चर्मकार परिवार में पैदा हुए थे। ईश्वर भक्ति के साथ आजीविका के लिए उन्होंने अपने पैतृक कार्य को ही चुना। ये जूते इतनी लगन और मेहनत से बनाते मानो स्वयं ईश्वर के लिए बना रहे हों। उस दौर के संतों की खास बात यही थी कि वे घर बार और सामाजिक जिम्मेदारियों से मुंह मोड़े बिना ही सहज भक्ति की ओर अग्रसर हुए और अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए ही भक्ति का मार्ग अपनाया।

संत रविदास की अपने काम के प्रति प्रतिबद्धता इस उदाहरण से समझी जा सकती है एक बार की बात है कि रविदास अपने काम में लीन थे कि उनसे किसी ने गंगा स्नान के लिए साथ चलने का आग्रह किया। संत जी ने कहा कि मुझे किसी को जूते बनाकर देने हैं यदि आपके साथ चला तो समय पर काम पूरा नहीं होगा और मेरा वचन झूठा पड़ जाएगा। उन्होंने कहा कि मन सच्चा हो तो कठौती में भी गंगा होती है, आप ही जाएं मुझे फुर्सत नहीं। यहीं से यह कहावत जन्मी मन चंगा तो कठौती में गंगा। उनके द्वारा कहे शब्द, दोहे, पद और अनमोल वचन (विचार) आज भी हम सभी को सदैव आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करते है।

संत शिरोमणि रविदास का मानना है कि किसी की पूजा इसलिए नहीं करनी चाहियें क्योंकि वो किसी ऊंचे पद पर बैठा हैं। यदि उस व्यक्ति में योग्यता के गुण नहीं हैं तो उसकी पूजा नहीं करनी चाहियें। इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति ऊँचे पद पर नहीं बैठा है परन्तु उसमें योग्यता गुण हैं तो ऐसे व्यक्ति को पूजना चाहिये। भगवान उस हृदय में निवास करते हैं जिसके मन में किसी के प्रति वैर भाव नहीं है, कोई लालच या द्वेष नहीं है। कोई भी व्यक्ति छोटा या बड़ा अपने जन्म के कारण नहीं बल्कि अपने कर्म के कारण होता है। व्यक्ति के कर्म ही उसे ऊँचा या नीचा बनाते हैं।

संत शिरोमणि रविदास का कहना था कि हमें हमेशा कर्म करते रहना चाहियें और मिलने वाले फल की आशा नहीं छोड़नी चाहयें, क्योंकि कर्म हमारा धर्म है और फल हमारा सौभाग्य है। जिस प्रकार तेज़ हवा के कारण सागर मे बड़ी-बड़ी लहरें उठती हैं, और फिर सागर में ही समा जाती हैं, उनका अलग अस्तित्व नहीं होता। इसी प्रकार परमात्मा के बिना मानव का भी कोई अस्तित्व नहीं है। कभी भी अपने अंदर अभिमान को जन्म न दें। इस छोटी से चींटी शक्कर के दानों को बीन सकती है परन्तु एक विशालकाय हाथी ऐसा नहीं कर सकता। मोह-माया में फंसा जीव भटकता रहता है। इस माया को बनाने वाला ही मुक्ति दाता है।

संत शिरोमणि रविदास का मानना था कि भ्रम के कारण साँप और रस्सी तथा सोने के गहने और सोने में अन्तर नहीं जाना जाता, किन्तु भ्रम दूर होते ही इनका अन्तर ज्ञात हो जाता है, उसी प्रकार अज्ञानता के हटते ही मानव आत्मा, परमात्मा का मार्ग जान जाती है, तब परमात्मा और मनुष्य में कोई भेदभाव वाली बात नहीं रहती। जीव को यह भ्रम है कि यह संसार ही सत्य है किंतु जैसा वह समझ रहा है वैसा नही है, वास्तव में संसार असत्य है। उनका मानना था कि जिसके हृदय में रात-दिन राम समाये रहते है, ऐसा भक्त राम के समान है, उस पर न तो क्रोध का असर होता है और न ही काम भावना उस पर हावी हो सकती है। उनका उपदेश था कि हरि के समान बहुमूल्य हीरे को छोड़ कर अन्य की आशा करने वाले अवश्य ही नरक जायेगें। यानि प्रभु भक्ति को छोड़ कर इधर-उधर भटकना व्यर्थ है।

संत शिरोमणि रविदास का कहना था कि जिस तरह केले के पेड़ के तने को छिला जाये तो पत्ते के नीचे पत्ता फिर पत्ते के नीचे पत्ता और अंत में पूरा पेड़ खत्म हो जाता है लेकिन कुछ नही मिलता। उसी प्रकार इंसान भी जातियों में बाँट दिया गया है इन जातियों के विभाजन से इन्सान तो अलग-अलग बंट जाता है और अंत में इन्सान भी खत्म हो जाते है लेकिन यह जाति खत्म नही होती है। उनका कहना था कि जब तक ये जातियां खत्म नहीं होगी तब तक इन्सान एक दूसरे से जुड़ नही सकता है यानि एक नहीं हो सकता है। इसलिए इस देश से जाति व्यवस्था समाप्त की जानी चाहिए।

–पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

मरु महोत्सव में ऊंटों से जुड़ी स्पर्धाओं ने दर्शकों का मन मोहा

■ महोत्सव के दौरान महिलाओं के मध्य पणिहारी मटका रेस का आयोजन हुआ

जैसलमेर, (कासं)। मरु महोत्सव में शनिवार को महोत्सव की अधिकांश गतिविधियां शहर के डेडानसर मैदान में केन्द्रित रही जहां रेगिस्तान के जहाज ऊंटों से जुड़ी कई स्पर्धाओं ने हजारों दर्शकों का मन मोह लिया। दर्शक कमल किशोर ने बताया कि इस बार मरू महोत्सव के दौरान मंत्री शाले मोहम्मद और जैसलमेर विधायक रूपाराम धनदे आने वाले विधानसभा चुनावों के नजरिए से अपने अपने एरिया में नाम कमाने की कोशिश कर रहे हैं। समारोह में वायु सैनिकों के पराक्रम और कलात्मक शौर्य प्रदर्शन के साथ ही लोक कलाकारों द्वारा दी गई मनोहारी प्रस्तुतियों ने अभिभूत किए रखा।

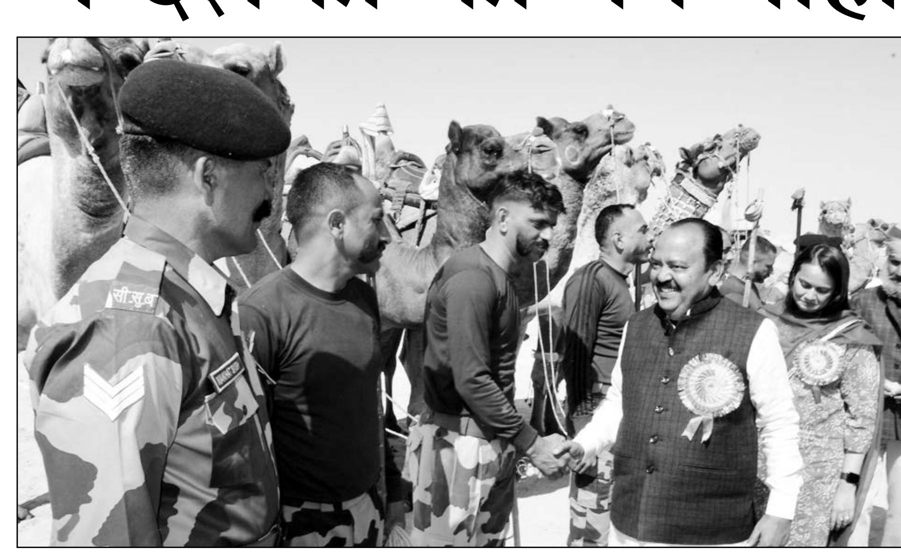

समारोह के दौरान जैसलमेर विधायक रूपाराम धनदे, जिला कलेक्टर टीना डाबी ने सीमा सुरक्षा बल के अधिकारियों व जवानों से मुलाकात की।

समारोह के दौरान जैसलमेर विधायक रूपाराम धनदे, जिला कलेक्टर टीना डाबी, सीमा सुरक्षा बल के उप समादेष्टा अशीम व्यास, राज्य महिला आयोग की सदस्य अंजना मेघवाल, ग्रुप केप्टन एयरफोर्स के.के. शर्मा, अतिरिक्त जिला कलेक्टर गोपाल लाल स्वर्णकार, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अमृत जीनगर, उप अधीक्षक पुलिस प्रियंका कुमावत, उपखण्ड अधिकारी जगदीश सिंह आशिया, जैसलमेर तहसीलदार निरभाराम कोडेचा, आयुक्त लजपाल सिंह सोढा, सहायक निदेशक पर्यटन कृष्ण कुमार के साथ ही अधिकारीगण, सीमा सुरक्षा बल, एयरफोर्स, आर्मी के अधिकारियों के साथ ही बड़ी संख्या में देशी-विदेशी सैलानी व स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

सीमा सुरक्षा बल के उप समादेष्टा मनोहर सिंह खिंची के नेतृत्व में "कैमल टेटू शो" की बेहतरीन प्रस्तुति दी गई। इसमें रेगिस्तान के जहाज द्वारा खिंची के नेतृत्व में अतिथियों को सलामी दी गई। वहीं सीमा सुरक्षा बल के सजे-धजे बांके जवानों ने ऊंटों पर विश्व के आठवे अजूबे माउण्टेन बैड़ की राजस्थानी गीतों की मधुर स्वर लहरियों पर विभिन्न प्रकार के करतब प्रस्तुत किए गए, जिसको देखकर सभी दर्शक अचम्भित रह गए। सीमा सुरक्षा बल के आरकेस्ट्रा टीम द्वारा राजेन्द्र दमामी के नेतृत्व मे हम "सीमा के प्रहरी है, फीदा इस पे हो जाएंगे" गीत की प्रस्तुति दी।

एयरफोर्स के जाबांजों द्वारा साहसिक एवं शारीरिक सन्तुलन को बनाएं रखते हुए एयर वॉरियर ड्रील की रोमांचक प्रस्तुति दी, टीम के प्रभारी विंग कमाण्डर कुनाल खन्ना एवं स्क्वाड्रन लीडर राजदीप सिंह के निर्देशन में टीम लीडर विक्रम के नेतृत्व में अपने हाथों में साढे पांच किलों वजन की राईफिल को खिलौने की तरह चलाकर सभी दर्शकों के रोंगटे खड़े करवा दिए।

महोत्सव के दौरान महिलाओं के मध्य पणिहारी मटका रेस का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाएं अपने सिर पर ईढानी रखकर पानी से भरा मटका लेकर निर्धारित स्थल पर पहुंची इस दृश्य को देख पूरा मैदान हंसी से खिल उठा। इस प्रतियोगिता में जैसलमेर की पुष्पा विश्नोई प्रथम, फलोदी की राजा विश्नोई द्वितीय व जोधपुर की सीमा देवी तृतीय स्थान पर रही। महोत्सव के दौरान भारतीय एवं विदेशी पुरूष व महिलाओं के मध्य रस्सा-कस्सी की प्रतियोगिता हुई जिसमें दोनों टीमों ने अपने दम का जोर लगाया। पुरूष टीम में वर्षों बाद भारतीय टीम 2-0 से विजेता रही, वहीं महिला टीम ने 2-1 से भारतीय महिला टीम विजेता रही। इस दौरान ऊँट श्रृंगार प्रतियोगिता का भी बेहतरीन आयोजन हुआ। निर्णायकों द्वारा दिए गए निर्णय के अनुसार गिरधारीराम का ऊँट प्रथम, नवाब खां का ऊंट द्वितीय एवं मीरे खां का ऊंट तृतीय स्थान पर रहा।

महोत्सव में शान-ए-मरूधरा प्रतियोगिता भी रोचक रही एवं सभी दर्शकों ने उत्साह से देखा। इसमें राजेन्द्र सिंह प्रथम, जेठु सिंह द्वितीय एवं रमेशाराम तृतीय रहा। भारतीय कैमल पोलो संघ के तत्वावधान में अध्यक्ष जितेन्द्र सिंह राठौड के नेतृत्व में कैमल पोलो संघ की टीम व सीमा सुरक्षा बल की टीम के बीच पोलो मैच का आयोजन हुआ। इसमें कैमल पोलो संघ की टीम 1-0 से विजेता रही। जैसलमेर विधायक धनदे, जिला कलेक्टर डाबी एवं अंजना मेघवाल ने कैमल टेटू शो के लिए उप समादेष्टा मनोहर सिंह खिंची को स्मृति चिन्ह प्रदान कर, एयरफोर्स के एयर वॉरियर ड्रील के प्रभारी को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।

वहीं कैमल पोलो मैच की विजेता टीम को 7 हजार रुपये नकद व ट्रॉफी तथा उपविजेता टीम को 5 हजार रुपये नकद व ट्रॉफी प्रदान की। वहीं शान-ए-मरूधरा, ऊँट श्रृंगार प्रतियोगिताओं के विजेताओं, रस्सा-कस्सी की विजेता टीम एवं सहभागियों के साथ ही पणिहारी मटका रेस की विजेता महिलाओं को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

राशिफल रविवार 5 फरवरी, 2023

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, रविवार, विक्रम संवत 2079, पुष्य नक्षत्र दिन 12:13 तक, आयुष्मान योग दिन 2:41 तक, विष्टि करण दिन 10:45 तक, चन्द्रमा कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग, रविपुष्य योग और राजयोग सूर्योदय से दिन 12:13 तक है। आज माघी पूर्णिमा, सत्य पूर्णिमा, होलिका रोपण है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:36 से 9:59 तक, लाभ-अमृत 9:58 से 12:41 तक, शुभ 2:02 से 3:24 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:14, सूर्यास्त 6:07

मेष

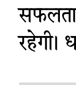

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

वृष

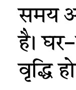

मित्रों/रिश्तेदारों से संबंध खराब हो सकते हैं और समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

मिथुन

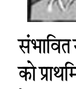

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

कर्क

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

सिंह

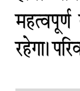

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कन्या

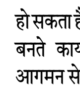

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

तुला

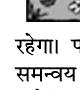

परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

वृश्चिक

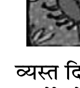

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु

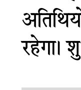

घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

मकर

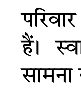

परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ

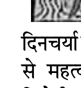

नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिजनों के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

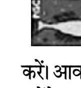

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।